* S - 2 5 2 5 / 6 0 0 *

S-2525

M. A. - (Sem. - I) Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper - V

(विशिष्ट युग प्रवृति का अध्ययन)

(A study of Ancient Hindi Literature Multi Disciplinary - Course - 1)

Time : Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. - (Sem. - 1)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 5**

☛ Subject Code No. : **2 5 2 5** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) इस प्रश्नपत्र में कुल **चार** प्रश्न दिये गयें हैं ।

(३) प्रत्येक प्रश्न के दाहिनी ओर लिखी संख्या उस प्रश्न के कुल अंक निर्दिष्ट करती हैं।

१ अपभ्रंश और हिंदी काव्य का पारस्परिक संबंध निरूपित कीजिए । १८

अथवा

१ आदिकाल के काव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियों पर आलोचनात्मक दृष्टिपात् कीजिए । १८

२ सप्रमाण सिद्ध कीजिए कि, पृथ्वीराज रासो आदिकालीन प्रामाणिक एवं प्रमुख रचना हैं। १७

अथवा

२ 'कपमास वध का काव्य सौंदर्य अत्यंत आकर्षक बन पड़ा हैं' – इस कथन को पुष्ट कीजिए । १७

३ ''ढोला मारू रा दोहा' में चित्रित ढोला और मालवणी का चरित्र मोहक बन पड़ा हैं'' – इस कथन के समर्थन में साहित्यिक दृष्टि से दोनों चरित्रों का संक्षेप में निरूपण कीजिए । १७

अथवा

३ 'ढोला मारू रा दोहा' के कवि का परिचय देते हुए उसके काव्य सौष्ठव पर विचार कीजिए।

४ (अ) टिप्पणी लिखिए : ९

(त) पृथ्वीराज रासो का वर्ण विषय ।

अथवा

(त) पृथ्वीराज रासो की भाषा ।

(थ) 'ढोला मारू रा दोहा' एक श्रेष्ठ मुक्तक काव्य ।

अथवा

(थ) 'ढोला मारू रा दोहा' की भाषा ।

(ब) ससंदर्भ स्पष्ट कीजिए : ९

(द) एकु बान पुहवी नरेस कपमासह मुक्कउ ।
उर उप्परि षरहरिउ वीर कष्षहत्तर चुक्काउ ।
बीड बान संधानि हनउ सोमेसुर नंदन ।
गाडउ करि निग्गहउ षनिव षोदउ संभरि धनि
तर छंडि ने जाइ अभागरउ गारड जुगुनषरउ।
इम जंपड चंद विरदिया सुकहा निमटिटहि इह प्रलउ ।

अथवा

(द) छतिय हत्थु धरंत नयन्ननु चाहियउ ।
तबहि दासि करि हथ्थ सु बंचि सुनावियउ।
बानावरि दुहु बाह रोस रिस दाहियउ।
मनहु नागपति पतिनि अप्प जगावियउ ।

(ध) नागरबेलि नित चरइ पाँपी षीबइ गंग ।
ढोला रयबारी कहड़, करहउ एक सुचंग।
जिण मुखि नागरबेलडि करहउ, एह सुरंग ।
माँगलोर बाडी चरइ, पापी पीवइ गंग ॥

अथवा

मालवणी करहइ कन्हइ ए बीनती करेह ।
साहिब मारू ऊपद्धा खोड़उ होइ रहेह ।
खोड़उ हँउ तउ डाँमिज्यउँ बँधियउ भूख मेरूँह ।
जाऊँ ढोला–रइ सासरइ सकला मूँग चरूँह